International Journal of Applied Research 2020; 6(10): 144-146

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(10): 144-146
www.allresearchjournal.com
Received: 25-08-2020
Accepted: 28-09-2020

डॉ. स्वाती कुमारी
ग्राम और पोस्ट – महेशवाडा, जिला – बेगूसराय, बिहार, भारत।

Corresponding Author:
डॉ. स्वाती कुमारी
ग्राम और पोस्ट – महेशवाडा, जिला – बेगूसराय, बिहार, भारत।

साहित्य और सिनेमा के दो अनमोल सितारे – रेणु और शैलेंद्र

डॉ. स्वाती कुमारी

प्रस्तावना

फणीश्वरनाथ रेणु हिन्दी कथा साहित्य में आंचलिकता के जनक माने जाते हैं। उनकी रचनाओं में लोक संस्कृति अपने पूरे रूप, रंग और गंध के साथ मौजूद है। उनका साहित्य अभावग्रस्त जनता की बेबसी और पीड़ा का साहित्य है। आंचलिक शब्दों और मुहावरों से सजी अपनी संवेदनशील और काव्यमयी भाषा में उन्होंने ग्रामीण समाज को एक नई सांस्कृतिक गरिमा प्रदान की है। उनके द्वारा रचित उपन्यास 'मैला आंचल' ने उन्हें शोहरत की बुलंदियों तक पहुंचा दिया। हिन्दी कथा साहित्य के अप्रतिम शिल्पकार के रूप में में रेणु आज भी अपनी खास पहचान बनाए हुए हैं।

जहां तक शैलेंद्र की बात है, उनकी पहचान क्रांतिकारी कवि और फिल्म जगत के एक विलक्षण गीतकार के रूप में है। फिल्म जगत में कदम रखने से पहले एक कवि के रूप में वे प्रतिष्ठित हो चुके थे। उस समय की सभी महत्वपूर्ण साहित्यिक पत्रिकाओं में उनकी रचनाएँ छप रहीं थी। 'न्योता और चुनौती' उनका पहला काव्य संग्रह था जो 1950 के दशक में प्रकाशित हुआ। वे आरंभ से ही इप्टा से जुड़ गए थे और उसकी गीत मंडली के लिए गीत लिखते थे। इनमें से कई गीत उस समय काफी प्रसिद्ध हुए। बाद में जब वे फिल्म की ओर आए तो फिर एक से बढ़कर एक खूबसूरत गीत लिखने का सिलसिला शुरू हुआ और शीघ्र वे चोटी के गीतकारों में शुमार किए जाने लगे।

साहित्य और सिनेमा की दुनिया के इन दो महारथियों की जड़ें संयोगवश बिहार की माटी से जुड़ी हैं। रेणु का जन्म 4 मार्च 1921 को पूर्णियाँ जिले के औराही हिंगना नामक गाँव में हुआ। पूर्णिया से पटना के बीच उनका लेखकीय सफर चलता रहा। वहीं शैलेंद्र के पूर्वज आरा के रहने वाले थे। वे 30 अगस्त, 1923 को रावलपिंडी में पैदा हुए, जहां उनके पिता सेना में कार्यरत थे। पिता की नौकरी खत्म होने के बाद उनका पूरा परिवार मथुरा आ बसा था। मथुरा में ही उनकी स्कूली शिक्षा पूरी हुई। बाद में उन्हें बंबई में रेलवे की नौकरी मिल गई। बंबई में रहते हुए ही वे राजकपूर के संपर्क में आए और उनका फिल्मी सफर शुरू हुआ।

'तीसरी कसम' फिल्म की निर्माण प्रक्रिया शुरू होने से पहले तक रेणु और शैलेंद्र के बीच कभी कोई संपर्क नहीं रहा। दरअसल यह फिल्म वह सेतु है जिसके कारण अपने समय के इन दो महान सितारों का मिलन संभव हुआ। इस फिल्म के निर्देशक बासु भट्टाचार्या ने अपने मित्र नवेन्दु घोष के कहने पर रेणु की कहानी 'मारे गए गुलफाम' पढ़ी और उन्हें यह कहानी इतनी भा गई कि उन्होंने इसे शैलेंद्र समेत अपने कई दोस्तों को पढ़वाया। शैलेंद्र को यह कहानी बेहद पसंद आई और उन्होंने तत्काल इसपर फिल्म बनाने का फैसला कर लिया। संयोगवश इस कहानी को ढूँढने वाले नवेन्दु घोष ने ही फिल्म की पटकथा लिखी, जबकि संवाद रेणु ने खुद लिखे। हालांकि इस कहानी के लेखक को खोजने की कहानी भी कम दिलचस्प नहीं है। लेखक–पत्रकार रामकृष्ण लिखते हैं: " लेकिन इस बात का पता लगाने में ही दोनों का खासा वक्त बरबाद हो गया कि तीसरी कसम का कथाकार जुम्मा–जुम्मा आठ दिन पहले ही अवतीर्ण हुआ था, हिन्दी –लेखन के संसार में, कभी वह पाटलिपुत्र के राजेंद्र नगर में पड़ा मिलता था, तो कभी प्रयागराज के सिविल लाइन्स स्थित कॉफीहाउस में।

यकीन दिलाने की बात नहीं है कि बासु ने शैलेंद्र के खर्चे पर उस लेखक को पकड़ने के लिए इन सभी जगहों की अनेकानेक हवाई यात्राएं भी कर डाली थीं, इस अवधि में, और बारे खुदा करते–करते आखिर उसकी गिरफ्त में आ ही गए थे रेणु एक दिन।"1

हिंदुस्तानी सिनेमा में साहित्यिक कृतियों पर फिल्म बनाने की परम्परा कोई नई बात नहीं थी, पर यह भी सच है कि प्रेमचंद सरीके साहित्यकारों के अनुभव सिनेमा को लेकर कभी अच्छे नहीं रहे। यह सब जानते हुए भी शैलेंद्र ने रेणु की कहानी 'मारे गए गुलफाम' पर 'तीसरी कसम' नाम से फिल्म बनाने का जोखिम उठाया क्योंकि दोनों के बीच एक मजबूत और भरोसेमंद रिश्ता था। दोनों कलाकार एक दूसरे की बहुत ईज्जत किया करते थे। रेणु ने शैलेंद्र को 'कविराज' की उपाधि से

विभूषित किया था।

रेणु के गृह जिले पूर्णिया में "तीसरी कसम" के मुहूर्त कार्यक्रम के साथ 14 जनवरी 1961 को फ़िल्म की शूटिंग शुरू हुई। रेणु और शैलेन्द्र एक यादगार और कलात्मक फ़िल्म बनाने को लेकर पूरे समर्पण भाव के साथ जुटे हुए थे। बतौर निर्माता शैलेन्द्र की यह पहली फ़िल्म थी। शैलेंद्र के करीबी दोस्त और शुभचिंतक राज कपूर अच्छी तरह जानते थे कि शैलेंद्र फिल्म निर्माण के प्रपंच से अनभिज्ञ हैं और इसलिए उन्होंने इस लाईन में आने से अपने दोस्त को रोकने की भी कोशिश की, पर शैलेंद्र नहीं माने। फिल्म–निर्माण शुरू होने के कुछ ही दिनों बाद अड़चनें आनी शुरू हो गईं। विभिन्न कारणों से फिल्म की टीम एक–एक कर बिखरनी शुरू हो गयी। जिस फ़िल्म को साल भर के अंदर बना लेने का लक्ष्य रखा गया था वह 4 साल बाद भी पूरी नहीं हो सकी थी। इस अनावश्यक विलंब के कारण फ़िल्म का बजट 3–4 लाख से बढ़कर 22–23 लाख तक पहुँच गया था। शैलेन्द्र कर्ज़ के बोझ तले दबते जा रहे थे। रेणु का स्वास्थ्य भी उन दिनों गिरने लगा था जिसके कारण वे अपने गाँव लौट गए थे। शैलेन्द्र अकेले ही इस विपत्ति का सामना करने को मजबूर थे।

शैलेन्द्र को भरोसा था कि फिल्म रिलीज़ हो जाने पर सब ठीक हो जाएगा और वे कर्ज़मुक्त हो जाएंगे। मगर आगे की राह इतनी आसान नहीं थी। अंततः काफी देर से ही पर फिल्म पूरी हुई। 11 जुलाई 1965 को शैलेन्द्र ने अपने साथियों– मित्रों के लिए तीसरी कसम का शो आयोजित किया था। विशेषज्ञों ने फिल्म की तारीफ की पर कुछ लोगों ने फिल्म के अंतिम दृश्य को बदलने की बात कही। फिल्म की सफलता को लेकर राजकपूर और टीम के कई अन्य सदस्य आश्वस्त नहीं थे। वितरकों की राय थी कि फिल्म के अंत में बदलाव कर हीरामन और हीराबाई का मिलन करा दिया जाय। उनकी राय में कहानी सुखांत होने पर दर्शकों द्वारा फिल्म को पसंद किया जाएगा। शैलेन्द्र और रेणु कहानी की मूल भावना के अनुसार फिल्म को दुखांत ही रहने देना चाहते थे। उनका कहना था फ़िल्म वैसी ही बनेगी जैसी लिखी गई है।

बम्बइया फिल्मों के फॉर्मूले के हिसाब से राजकपूर और टीम ए अन्य सदस्य दर्शक के मनोरंजन पर ज़ोर दे रहे थे, लेकिन रेणु मानते थे कि अंत बदलने से कहानी की आत्मा ही मर जाएगी। उनके इस निर्णय में शैलेंद्र पूरी मजबूती से उनके साथ खड़े रहे। अपने संस्मरण 'तीसरी कसम को जान–बूझकर फेल किया गया' में इस प्रसंग का ज़िक्र करते हुए रेणु लिखते हैं:

"तीसरी कसम पूरी हो चुकी थी। शैलेंद्र के बुलावे पर मैं बंबई आया। इस बार मुझे होटल में ठहराया गया, क्योंकि मैं शैलेंद्र का नहीं, फाइनांसर का अतिथि था। शैलेंद्र ने बताया कि वे लोग फिल्म का अंत बदलकर हीरामन–हीराबाई को मिला देना चाहते हैं। शैलेंद्र का रोम–रोम कर्ज में डूबा हुआ था फिर भी वे इसके लिए तैयार नहीं थे। उनका जवाब था कि बंबइया फिल्म ही बनानी होती तो वे 'तीसरी कसम' जैसे विषय को लेते ही क्यों? और जब वह विषय लिया है तो उसका मतलब है कि वे कुछ अलग काम कर दिखाना चाहते हैं। दवाब से तंग आकर आखिर उन्होंने कह दिया कि लेखक को मना लीजिए तो वे आपत्ति नहीं करेंगे।

शैलेंद्र ने मुझे सारी स्थिति समझा दी। टक्कर राज कपूर जैसे व्यक्ति से थी, जो न केवल फिल्म के हीरो थे, बल्कि उनके मित्र और शुभचिंतक भी। भाषण शुरू हुआ। उपन्यास क्या है? साहित्य क्या है? फिल्म क्या है? पाठक क्या हैं? दर्शक क्या हैं? कहानी लिखने से पाठक तक पहुँचने की प्रक्रिया क्या है? खर्च क्या है? फिल्म निर्माण क्या है? उसका आर्थिक पक्ष क्या है? ऐसे विचार–प्रवर्तक भाषण शायद पुणे फिल्म इंस्टीट्यूट में भी नहीं होते होंगे। इतना ही नहीं तो शैलेंद्र पर चढ़े कर्ज़ और उसे उबारने की भी दुहाई दी गयी। और तो और, पैसा लगाने वाला मारवाड़ी भी जो आँखें बन्द किये बैठा था, कहने लगा– 'आप यह मत समझिए कि मैं सो रहा था। मैं तो कहानी का ऐंड सोच रहा था। चेन खींचकर गाड़ी रोक लो और दोनों को मिला दो।'

आखिर मैंने कह दिया कि वे जो चाहें कर लें। मेरा पारिश्रमिक मिल चुका है। हां, अगर कुछ परिवर्तन होता है, तो मेरा नाम लेखक के रूप में न दिया जाये। जब मैं अंतिम निर्णय देकर लौटा तो शैलेंद्र छाती से लगकर सुबकने लगे। ऐसा निर्माता आज तक किस लेखक को मिला होगा?"2

अंततः फिल्म यथावत रिलीज तो हुई पर जैसा अंदेशा था, वही हुआ। अंत समय में फ़िल्म के डिस्ट्रीब्यूटर्स ने अपने हाथ पीछे खीच लिए और फ़िल्म की रिलीज़ अटक गई। काफी कोशिशों के बाद दिल्ली और उत्तर प्रदेश में फिल्म रिलीज़ हो पाई। वितरकों के असहयोग के कारण फिल्म बॉक्स ऑफिस पर औंधे मुंह जा गिरी। फिल्म की असफलता से शैलेंद्र टूट गए। जिन दोस्तों को वे हमेशा अपना समझते रहे, उनसे ही उन्हें धोखा मिला था। अपनों की बेरुखी और धोखे को शैलेंद्र का संवेदनशील कवि–हृदय बर्दाश्त नहीं कर सका और 14 दिसम्बर 1966 को अपने ही गीत ''हम तो जाते अपने गाम, सबको राम राम राम'' को चरितार्थ करते हुए वे इस दुनिया को छोड़कर सदा के लिए चले गए।

इसे विडम्बना ही कहेंगे कि सितम्बर 1966 में जिन दर्शकों ने इस फिल्म को नकारा था उन्हीं ने 1967 के आरंभ में इसे हाथों–हाथ लिया। मुम्बई में फिल्म चार हफ्ते हाउसफुल चली। बंगाल जर्नलिस्ट एसोसिएशन ने "तीसरी कसम" को सर्वश्रेष्ठ फिल्म का सम्मान प्रदान किया। महामहिम राष्ट्रपति द्वारा इसे 'स्वर्ण कमल' सम्मान से नवाजा गया। लेकिन शैलेंद्र इस मान– सम्मान को देखने के लिए जिन्दा न थे। शैलेन्द्र ने तीसरी कसम फिल्म की आत्मा के साथ अनाचार होने की बजाय अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। रेणु मानते थे कि "शैलेन्द्र को शराब या कर्ज ने नहीं मारा, बल्कि वह एक धर्मयुद्ध में लड़ता हुआ शहीद हो गया।"

फिल्म की व्यावसायिक दुनिया में रहते हुए भी शैलेंद्र व्यावसायिक नहीं हो सके थे। कविता और गीत की तरह फिल्म निर्माण भी उनके लिए सर्जनात्मक तृप्ति का माध्यम था। लेखक प्रहलाद अग्रवाल लिखते हैं:

''कोई जो यह समझे कि शैलेंद्र ने "तीसरी कसम" टिकिट खिड़की पर झंडे गाड़ देने की खातिर बनाई थी तो ऐसी बुद्धिमता का शांतिपाठ ही मुनासिब है। पर यह भी अपनी जगह उतना ही बड़ा झूठ है कि दर्शकों ने इसे एक सिरे से नकार दिया। हकीकत ये है कि शैलेंद्र इसके रोजगार में असफल हो गए। व्यवसाय तंत्र के बीच से वह राह नहीं बना सके।"3

शैलेंद्र की असमय मृत्यु ऐसी पीड़ादायक घटना थी जिसने कलारसिकों का दिल तोड़ दिया। रेणु के लिए तो यह पीड़ा असह्य थी। उन्हें यह लगता था कि 'तीसरी कसम' फिल्म बनाने के चक्कर में ही शैलेंद्र की मृत्यु हुई। ऐसे में वे खुद को शैलेंद्र की मौत का जिम्मेदार मानते थे। इस बात को लेकर रेणु के मन में आजीवन अपराध बोध बना रहा। अपने दोस्त को याद कर वे एकांत में रोया करते। 'तीसरी कसम' फिल्म का यह गीत रेडियो पर जब बजता तो उसे सुनकर रेणु को शैलेंद्र की बहुत याद आती और वे भावुक हो जाते थे:

"सजनवा बैरी हो गये हमार
चिठिया हो तो हर कोई बाँचे
भाग न बाँचे कोय
करमवा बैरी हो गये हमार
जाए बसे परदेश सजनवा
सौतन के भरमाए
न सन्देश न कोई खबरिया
रुत आये रुत जाए"

1967 से 1969 के बीच रेणु का लिखना–पढ़ना लगभग बंद हो गया था। इस दौरान वे चाहकर भी कुछ नहीं लिख नहीं पा रहे

थे। 1969 ई0 के अंत में गंभीर रुप से बीमार होने के कारण रेणु को पटना मेडिकल अस्पताल में भर्ती कराया गया। अस्पताल के बिस्तर पर लेटे–लेटे वे शैलेन्द्र, राजकमल चौधरी और ऋत्विकघटक जैसे दोस्तों को याद करते। अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद अपनी इस मनःस्थिति को लेकर उन्होंने 'रेखाएँ, वृत्त–चक्र' नाम से एक कहानी लिखी। हिन्द पॉकेट बुक्स द्वारा 1972 में प्रकाशित तीसरी कसम फिल्म की पटकथा शैलेंद्र को समर्पित करते हुए रेणु ने जो लिखा है वह इन दो कलाकारों के रिश्ते की गहराई को बयान करता है। रेणु लिखते हैं:

"स्वर्गीय शैलेंद्र को! जिसकी याद ज़िंदगी भर आती रहेगी। जब कहीं कोई – 'सजनवा बैरी' गाएगा अथवा 'सजन रे झूठ मत बोलो'–उसकी मुसकुराती छवि 'के ...इन' होगी – और मैं पूछूंगा – पूछता रहूँगा उससे– 'क्यों जीवन के पाठ पर मिले मीत, क्यों गीतों से से भरे सपने जगाए'। कहे को दी जुदाई....? क्यों – ओ कविराज.....?"4

रेणु साहित्य के विशेषज्ञ भारत यायावर ने इन दो कलाकारों की खूबसूरत जोड़ी के बारे में लिखा है: "ऐसे भावुक और संवेदनशील गीतकार–कथाकार यानी शैलेन्द्र – रेणु की जोड़ी थी, जो 'तीसरी कसम' के नायक हीरामन की तरह भोला – भाला, दुनियादारी के उलट–पेंच से दूर, दूषित और नापाक में भी पवित्रता की खुशबू पाने वाली, दुर्लभ व्यक्तित्व रखने वाली अविस्मरणीय जोड़ी थी।"5

रेणु परम्पराओं और आस्थाओं में विश्वास रखने वाले व्यक्ति थे। संकट और मुश्किल घड़ी में वे अपने प्रभु को याद कर लिया करते और तनावमुक्त हो जाते थे। किन्तु शैलेन्द्र के पास यह विकल्प नहीं था, वे नास्तिक थे। अपने दुख–दर्द वे दोस्तों के साथ बाँट सकते थे पर वे ऐसा न करते और अंदर ही अंदर घुटते रहते। तबीयत ठीक न होने पर रेणु शराब छोड़ देते थे, किन्तु शैलेन्द्र का पीना बढ़ जाता था। कुछ लोग मानते हैं कि अपने गम को भुलाने के लिए शैलेंद्र बहुत ज्यादा शराब पीने लगे थे और यही उनकी जान का दुश्मन बन गई। रेणु और शैलेन्द्र दोनों सच्चे कलाकार थे। एक ने कथा साहित्य में तो दूसरे ने कविता और गीत के क्षेत्र में अपने हुनर का परचम लहराया था। दोनों हमउम्र थे और लोक ह्रदय के चितेरे थे। फिल्म "तीसरी कसम" की कव्वाली दोनों को अत्यंत प्रिय थी। जब भी दोनों मिलते इन पंक्तियों को साथ – साथ गाते और अपने पत्रों में भी इनका जिक्र करते:

"अरे तेरी बाँकी अदा पर मैं खुद हूँ फिदा
तेरी चाहत का दिलबर बयाँ क्या करुँ?
यही ख्वाहिश है कि तू मुझको देखा करे
और दिलोजान मैं तुझको देखा करुँ।"

आज हमारे दरमियान न शैलेन्द्र हैं, न रेणु लेकिन हिंदुस्तानी सिनेमा और साहित्य के ये दो महान सितारे अपनी अनमोल और कालजयी कृतियों की बदौलत सदियों तक लोगों के दिलों पर राज करेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. रामकृष्ण. फिल्मी जगत में अर्धशती का रोमांच (2006), भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, पृ–70
2. भारत यायावर (सं). रेणु रचनावली,भाग–5, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ–295
3. प्रह्लाद अग्रवाल. कवि शैलेंद्र, ज़िंदगी की जीत में यकीन (2005), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ–28
4. वही – पृ–67
5. इंद्रजीत सिंह (सं). धरती कहे पुकार के–गीतकार शैलेन्द्र (2019), वी के ग्लोबल पब्लिकेशन प्रा. लिमिटेड, पृ–92